धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

RNI NO. : MPHIN33094

वर्ष- 14वां अंक 53

जनवरी-मार्च 2020

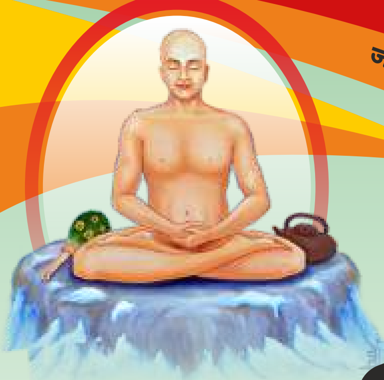

राहिल राहुल मेहता, मुम्बई

ध्येय धवल गांधी, मुम्बई

झाला संकेत कोटड़िया, हिम्मतनगर

वत्थु सहावो धम्मो

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

चहकती चेतना के अन्तर्गत

जन्मदिवस उपहार योजना

यदि आप करते हैं अपने बच्चों से प्यार
तो आइये हमारे पास
हम बनायेंगे जन्मदिन यादगार
भेजेंगे उपहार और शुभकामनायें अपार
तो देर किस बात की आज ही इस योजना के **सदस्य बनिये**

आप पायेंगे
तीन उपहार

अपने जन्मदिवस के 10 दिन पूर्व
आपके नाम पर लिखी कविता के साथ
एक सुन्दर मोमेन्टो, एक आकर्षक उपहार
साथ ही एक प्यारा सा ग्रीटिंग कार्ड
जिसमें होगी जन्म दिवस मनाने की सुन्दर विधि

शुल्क मात्र **500/-** एक वर्ष हेतु

आप स्वयं सदस्य बनें और आप अपनी ओर से अपने रिश्तेदारों, मित्रों को सदस्य बनाकर उन्हें सरप्राइज दे सकते हैं। इस उपहार में भेंटकर्ता के रुप में आपका नाम होगा। आप सदस्यता राशि पेटीएम (9300642434) करें से या हमारे बैंक खाते में जमा कर आप हमें अपना पूरा पता, फोटो और जन्म दिनांक व्हाट्सएप करें।

Email : kahansandesh@gmail.com

Not Anymore...
(A Collection of Short Moral Jain Stories)

Writer
Virag Shastri
Jabalpur (M.P.)

Publisher
Acharya Kundkund Sarvodaya Foundation
Jabalpur (M.P.)

अब नहीं...
(शिक्षाप्रद लघु नाटक-कथा संग्रह)

लेखक
विराग शास्त्री
जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन
जबलपुर (म.प्र.)

Whatsapp No.9300642434

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

जनवरी - मार्च 2020

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1	11	चहकती चेतना कैलेन्डर - २०२०	16-17
2	संपादकीय	2-4	12	विज्ञापन - पेनड्राइव/सहयोग	18
3	अतिशय क्षेत्र - कोनीजी	5	13	प्रश्न आपके उत्तर हमारे जिनागम के	19
4	सच्चाई की जीत	6-8	14	मुनि बना कंसज्ञान पहेली	2021
5	भक्ति की परीक्षा	9-10	15	अब नहीं उड़ाऊँगा	22-23
6	प्रेरक प्रसंग	11	16	समाचार	24
7	अयोध्या में जैन मंदिर	12	17	चैतन्य बाल भास्कर के परिणाम	25-26
8	कवितायें - होली / अच्छे बच्चे	13	18	कर्म का खेल मिटे न रे भाई	27-28
9	नमस्कार किसको	14	19	जन्म दिवस	29
10	गौरवमयी इतिहास	15	20	कॉमिक्स	30-32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क - 500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

संपादकीय

एक निवेदन मम्मी पापा से

बच्चों को सुकुमार नहीं, बल्कि संघर्षशील बनाईये

आज के तेजी से बढ़ते युग में बच्चों को सम्भालना भी एक बड़ी चुनौती बन गया है लेकिन बच्चों का पालन पोषण संस्कारित रूप से करना हमारा पारिवारिक दायित्व भी है और नैतिक दायित्व भी। यदि हमारे पूर्वजों ने हमें संस्कारित करके हमें जिनधर्म की संपत्ति न दी होती तो आज न जिनमंदिर होते और न ही जिनधर्म के संस्कार होते। इसी विरासत को आगे बढ़ाने का दायित्व हमारा है। हम अपने बच्चों को हर वह सुविधा और साधन देना चाहते हैं जो हमें कभी प्राप्त नहीं हुये। हमने जो संघर्ष किये हैं हम नहीं चाहते कि उसका दसवाँ हिस्सा भी बच्चे संघर्ष करें। उनकी सुख सुविधायें हमारी प्राथमिकता बन गई है। बच्चों को जरा सी चोट लगने पर वह पूरे परिवार के चिंता का विषय बन जाती है और परिवार के सदस्य उस बच्चे से ऐसे व्यवहार करने लगते हैं जैसे वह अभी-अभी आईसीयू वार्ड से बाहर आया हो। बच्चे भी इस बात को भली भांति समझते हैं कि उन्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिये किस बहाने का प्रयोग करना है। बाकी उपायों के साथ आँख में आंसू तो सदा तैयार रहते हैं। बच्चों को आवश्यक सुविधायें देना हमारा ही कर्तव्य है पर आवश्यकता से अधिक इच्छायें पूरी करना आपके लिये घातक है और उनके लिये अनर्थकारी।

आज व्यापार, शिक्षा, नौकरी आदि हर क्षेत्र में संघर्ष है पर क्या हमारे बच्चे उस संघर्ष के लिये तैयार हैं, क्या आपको लगता है छोटी-छोटी सी बात पर धैर्य खोते बच्चे किसी बड़े लक्ष्य के लिये तैयार हैं? हो सकता है बच्चे अपनी शैक्षणिक प्रतिभा के बल पर उच्च पद प्राप्त कर लें परन्तु जीवन की परिस्थितियों का सामना कैसे करेंगे? अभी कुछ दिन पूर्व नोएडा में प्रतिमाह दो लाख रुपये वेतन पाने वाले व्यक्ति ने ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली, यह सुनकर उसकी पत्नी भी तनाव (टेन्शन) में आ गई और उसने पहले पाँच साल की बेटी को फांसी पर लटकाया और फिर स्वयं फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। जाँच करने पर पता लगा कि उसे अपनी जरुरतें पूरी करने के लिये दो लाख भी कम पड़ते थे इसलिये उस पर बहुत कर्ज हो गया था। ऐसी बहुत सारी घटनायें सामने देखने में आ रहीं हैं। बच्चे परिवार में होने पर भी एकाकी जीवन जी रहे

हैं। माता-पिता की अनेक तरह की व्यस्तता और बच्चों की पढ़ाई की व्यस्तता से पारिवारिक संवाद बन्द सा हो गया है। यदि कुछ समय मिलता भी है तो फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम जैसी सोशल मीडिया पर समय बिताना जरूरी लगता है जैसे श्रावक के छःआवश्यक के साथ अब सातवाँ आवश्यक भी जुड़ गया है। आज यह भ्रम हो गया है कि जीवन की सभी समस्याओं का समाधान मात्र धन है। बल्कि धन जीवन का मुख्य उद्देश्य नहीं बल्कि शांति मुख्य उद्देश्य होना चाहिये।

इसलिये जरूरी है कि हम अपने कार्यों के साथ अपने बच्चों से स्वस्थ संवाद भी रखें, उनके मित्र बनकर उनकी प्रत्येक गतिविधि में सहयोग करें, उनसे स्कूल में होने वाली गतिविधियों की जानकारी लेते रहें, उनकी दिनचर्या में उन्हें समय का महत्व, धन की बचत का महत्व, समाज में अच्छे-बुरे की पहचान सिखायें, उनकी हर इच्छा को पूरी न कर उन्हें जीवन की वास्तविकता से परिचित करायें, अपने संघर्षों की बातें बतायें, लड़कियों को शील सुरक्षा के उपाय बतायें। यदि हम सामान्य रूप से इन बातों को अमल कर पायें तो हमारे बच्चों को भविष्य की सभी परिस्थितियों का सामना करने में मजबूती से तैयार कर सकेंगे।

बच्चों से बातें

अंक नहीं, आचरण की श्रेष्ठता से महानता

प्रिय बच्चो! आप सभी को जय जिनेन्द्र। आप सभी अपनी परीक्षाओं की तैयारियों में व्यस्त होंगे और होना भी चाहिये। पढ़ाई के साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखियेगा। हाँ! आपसे कुछ बात भी कहना है। परीक्षा में नम्बर कम आयें तो घबराना नहीं और न ही दुःखी होना। नम्बर किसी भी व्यक्ति की सफलता का मापदण्ड नहीं है। विश्व में ऐसे हजारों व्यक्ति हुये हैं जो कभी स्कूल ही नहीं गये या फिर जिन्होंने बड़ी डिग्री नहीं ली परन्तु उनका नाम पूरे विश्व में गौरव के साथ लिया जाता है। फिर भी प्रयास करना आपका कर्तव्य है। आपके मम्मी-पापा और आपका सारा परिवार आपके साथ सदैव है। अपने परिवार में जिन्हें आप अपने नजदीक समझते हैं उनसे अपनी हर बात कहें, अपने स्कूल की समस्या हो या दोस्तों का झगड़ा। किसी भी प्रॉब्लम में ये ही आपके साथ रहेंगे। यदि मम्मी या पापा आपको डांटते भी हैं तो उनका बुरा नहीं मानना। परिवार की डांट के पीछे भी उनका बहुत प्यार है। वे सब आपके सुन्दर भविष्य के लिये आपको समझाने का प्रयास करते हैं। यदि आप ज्यादा मोबाइल या टीवी देखोगे तो वह तो आपके लिये भी

अच्छा नहीं है। जिनसे आपका या आपके परिवार का कोई परिचय नहीं है और ऐसे व्यक्ति आपसे बात करने का प्रयास करें या अन्य कोई लोभ दें तो उनसे बिल्कुल दूर रहिये और ऐसी बात अपने परिवार के सदस्य को जरूर बतायें।

आपके पिता आपके भविष्य की चिन्ता करते हैं और मम्मी आपके लिये भोजन, पढ़ाई आदि की व्यवस्था करके आपको प्रसन्न देखना चाहती है इसलिये आपका भी कर्तव्य है कि ऐसा कोई कार्य न करें जिससे परिवार के किसी भी व्यक्ति को शर्मिन्दा होना पड़े। खासकर बच्चियाँ विशेष सावधान रहें। स्कूल में भी लड़कों से मर्यादा में दोस्ती करें। आपके कपड़े और आपका व्यवहार शालीन हो ताकि आप किसी भी परेशानी में न आयें। जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें और सोशल मीडिया, टिक टॉक जैसे समय बरबाद करने वाली चीजों से दूर रहें। यह मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभता से मिला है। इसलिये स्कूल की पढ़ाई के साथ धार्मिक कार्यों से भी जुड़े रहें। समय पर जिनमंदिर, पाठशाला, अभिषेक - पूजन के लिये भी समय निकालें। रात्रि को सोने के पहले और सुबह उठने के बाद शांत मन से णमोकार मंत्र पढ़कर पंच परमेष्ठी भगवन्तों को याद करें। कभी भगवन्तों, जिनमंदिर या जिनवाणी आदि की उपेक्षा न करें। सदा उनकी प्रशंसा और अनुमोदना करें। बड़ों की विनय करें और छोटों को प्यार दें।

यह सब बातें आपके व्यक्तित्व को सुन्दर बनायेंगी और जीवन के हर क्षण में आपको साहस देंगी। वर्तमान का सामाजिक माहौल कुछ गलत व्यक्तियों के कारण गन्दा हो रहा है। आप निर्दोष रहेंगे तो आप अपने आसपास सुन्दर वातावण का निर्माण करेंगे जो आपके जीवन को सुखी और समृद्ध करेगा।

– विराग शास्त्री

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप **सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम** से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाटएप / करें।

सहयोग

कोलकाता निवासी श्री श्रेयांसजी जैन और श्रीमति लक्ष्मी जैन के पुत्र श्री पुलकित का शुभ विवाह कोलकाता निवासी श्री संजय-रेणु जैन की सुपुत्री श्रुति के साथ 23 नवम्बर को सम्पन्न हुआ। इस मांगलिक प्रसंग पर संस्था को 11000/- की राशि प्रदान की गई। नव विवाहित दम्पत्ति के सुखद धर्ममय मंगल जीवन की मंगल कामना।

अतिशय क्षेत्र कोनीजी
(कुण्डलगिरि)

मध्यप्रदेश के प्रमुख नगर जबलपुर से 42 किमी की दूरी पर पाटन तहसील के अन्तर्गत स्थित अतिशय क्षेत्र कोनीजी प्राचीन अतिशय क्षेत्र है। इसे कुण्डलगिरि भी कहा जाता है। यह क्षेत्र विंध्यांचल पर्वतमाला के कैमोर पहाड़ियों की तलहटी में और हिरन नदी के तट पर स्थित है। यहाँ कुल दस जिनमंदिर हैं। इस जिनमंदिर के मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ हैं। यहाँ पर सभी जिनबिम्ब अत्यंत मनोज्ञ और वीतरागता का संदेश देते हैं। यहाँ अत्यंत प्राचीन शैली में निर्मित नन्दीश्वर जिनालय और सहस्रकूट जिनालय विशेष दर्शनीय हैं।

कोनीजी क्षेत्र से सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर 110 किमी, अतिशय क्षेत्र पिसनहारी मढ़िया 40 किमी, अतिशय क्षेत्र बहोरीबन्द 67 किमी, विश्व प्रसिद्ध जलप्रपात भेड़ाघाट 25 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ आवास और भोजन की (पूर्व सूचना पर) समुचित व्यवस्था है।

सच्चाई की जीत

सिंहपुर नाम के नगर में राजा सिंहसेन नाम के राजा राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम रामदत्ता था। राजा बहुत बुद्धिमान और न्यायप्रिय था। उनकी रानी भी अत्यंत बुद्धिमान और सरल स्वभावी थी। राज्य के राजपुरोहित का नाम श्रीभूति था। उसने अपने बारे में एक बात प्रसिद्ध करवा रखी थी कि वह कभी झूठ नहीं बोलता। अपनी बात पर विश्वास दिलाने के लिये उसने अपने गले में जनेऊ में चाकू लगा रखा था और कहता था कि यदि मैं झूठ बोलूँ तो अपनी जीभ काट लूँगा। अनेक भोले लोग उसके इसी बात का श्रद्धान कर उससे ठग लिये जाते थे। लेकिन वे बेचारे असहाय और गरीब होने से अपनी बात किसी से कह नहीं पाते थे और यदि कोई श्रीभूति की मायाचारी की बात किसी से कहता तो कोई उसकी बात का विश्वास नहीं करता था।

एक दिन एक पद्मखण्डपुर देश का व्यापारी समुद्रदत्त व्यापार करते हुये सिंहपुर नगरी में आया। उसके पास व्यापार से कमाया हुआ बहुत धन एकत्रित हो गया था। उसे व्यापार के लिये आगे की यात्रा पर जाना था परन्तु इतना धन साथ में ले जाने पर खतरा था। इसलिये उसने सोचा यदि कोई इस धन को सुरक्षित रख ले तो वह निश्चिंत होकर आगे की यात्रा पर जा सकता है। तभी उसे श्रीभूति के बारे में मालूम हुआ तो उसने अपने सारे धन के बदले बहुत कीमती कुछ रत्न खरीद लिये और उन रत्नों को लेकर श्रीभूति के पास गया। उसने श्रीभूति को अपनी समस्या बताकर उससे वापस आने तक रत्न सुरक्षित रखने का आग्रह किया। श्रीभूति ने उसके रत्न रख लिये। समुद्रदत्त प्रसन्नता पूर्वक व्यापार के उद्देश्य से रत्नद्वीप रवाना हो गया। उसने बहुत दिनों तक वहाँ रहकर व्यापार से बहुत धन कमाया और जब वह समुद्र के रास्ते वापस लौट रहा था तो पाप उदय से उसका जहाज

समुद्र में किसी पत्थर से टकराकर डूब गया और बहुत सारे व्यापारी और कर्मचारी समुद्र में डूबकर मर गये। समुद्रदत्त किसी तरह जहाज के एक लकड़ी के टुकड़े को पकड़कर समुद्र से बाहर आ गया। उसके सारे कपड़े फट गये और हाथ-पैरों में चोट भी लग गई थी। वह किसी तरह सिंहपुर पहुँचा और सीधा श्रीभूति पुरोहित के घर की ओर चल पड़ा। श्रीभूति ने उसे दूर से ही पहचान लिया। उसके मन में लोभ आ गया और अपने साथ बैठे लोगों से बोला - देखो! कोई भिखारी चला आ रहा है, अब यहाँ आकर भीख मांगेगा।

समुद्रदत्त श्रीभूति को नमस्कार कर जहाज के टूटने की पूरी घटना सुनाने लगा। श्रीभूति ने उसकी उपेक्षा करते हुये कहा - मेरे पास तुम्हारी घटना सुनने का इतना समय नहीं है। पर लगता है तुम्हारे जीवन पर कोई बड़ा संकट आया है। मैं तुम्हारे दुःख को समझ सकता हूँ। तुम जाओ, मैं नौकरों से कहकर आठ दिनों के भोजन का सामान और कुछ कपड़े तुम्हें दिलवा देता हूँ। समुद्रदत्त ने घबराते हुये कहा - मुझे भोजन का सामान नहीं चाहिये। मुझे मेरे वे रत्न वापस चाहिये जो मैं जाने के पहले आपके पास सुरक्षित रख गया था। श्रीभूति को रत्न का नाम सुनते बहुत क्रोध आ गया और चिल्लाते हुये कहा - अरे भिखारी! पागल हो गया है, क्या तू मुझे बदनाम करना चाहता है, तू कौन और कहाँ का रहने वाला है, मैं तो तुझे जानता तक नहीं, तो तेरे रत्न मेरे पास कैसे आये ? जा जा पागल कहीं का! लगता है तेरा व्यापार नष्ट हो जाने से तू पागल हो गया है। श्रीभूति की ऐसी बातें सुनकर समुद्रदत्त पागल जैसा ही हो गया। वह चिल्लाता हुआ श्रीभूति के घर से बाहर निकला कि पापी श्रीभूति मेरे रत्न नहीं दे रहा है। वे सारे शहर में घूमकर चिल्लाता रहता, उसे भिखारी जैसा देखकर लोग उसकी बात का विश्वास भी नहीं करते। जब रात हो जाती तो राजमहल के पास एक पेड़ पर चढ़ जाता और सारी रात चिल्लाया करता कि श्रीभूति ने मेरे रत्न हड़प लिये हैं। ऐसा करते-करते छः माह बीत गये।

समुद्रदत्त को इस तरह रोज-रोज चिल्लाना देखकर महारानी रामदत्ता ने सोचा - आखिर बात क्या है? जो रोज इस तरह चिल्लाता है। इसका पता लगाना चाहिये। उसने अपने पति से कहा - हे स्वामी! इस व्यक्ति को देखकर मुझे कुछ शंका उत्पन्न होती है। आप तो न्यायप्रिय हैं। कम से कम इस बात की सच्चाई का पता लगाना ही चाहिये। आपको समुद्रदत्त को बुलाकर सारी जानकारी प्राप्त करना चाहिये। राजा ने रानी की सलाह पर समुद्रदत्त को बुलाकर सारी घटना की जानकारी ली और रानी से चर्चा की। राजा ने कहा - महारानी! उसके चेहरे से इसकी बात सत्य लगती है, पर श्रीभूति हमारे राज्य के प्रतिष्ठित राजपुरोहित हैं। हमें उनके सन्मान का ध्यान रखते हुये सच्चाई का पता लगाना होगा । रानी ने कहा - आप चिन्ता मत करें। मेरे पास एक बढ़िया उपाय है।

राजा की सहमति पाकर रानी ने दूसरे दिन राजपुरोहित श्रीभूति को अपने महल में बुलवाया और उनका बहुत आदर सत्कार किया। फिर कहा - मेरी बहुत दिनों से आपसे मिलने की इच्छा थी, पर समय ही नहीं मिल पाता था। आज आपके यहाँ पर पधारने पर बहुत खुशी मिली। भोजन के पश्चात् महारानी ने श्रीभूति से कहा - पुरोहितजी! सुना है आप पासे (लूडो जैसा एक प्रकार का खेल) खेलने में बहुत चतुर हैं। मेरी बहुत दिनों से आपके साथ पासे खेलने की इच्छा है। इतना कहकर रानी ने दासी को चौपड़ लाने का आदेश दिया। दासी तुरन्त चौपड़

और पासे लेकर आई। यह देखकर श्रीभूति दंग रह गया और घबराकर बोला - मैं एक भिक्षुक ब्राह्मण और आपके साथ चौपड़ खेलूँगा तो महाराज तो मुझे दण्ड देंगे। रानी ने उन्हें निश्चिंत करते हुये कहा - आप चिंता मत करें, महाराज कुछ नहीं कहेंगे।

बेचारा श्रीभूति विचार में पड़ गया। एक ओर महाराज का भय और दूसरी ओर रानी का आदेश। आखिर उन्हें खेलना ही पड़ा। रानी ने पहली ही बाजी में पुरोहितजी की सोने की अंगूठी जीत ली। इस अंगूठी पर श्रीभूति का नाम अंकित था। खेल के बीच में ही रानी ने वह अंगूठी अपनी दासी को देकर भेज दिया और वापस खेल में लग गई। कुछ देर बाद दासी निराश होकर वापस आ गई। रानी ने आगे के खेल में पुरोहितजी का जनेऊ और चाकू जीत लिया और चुपचाप वह दासी को दे दिया। दासी के वापस आने तक रानी पुरोहित को खेल में लगाये रही और थोड़ी देर में दासी प्रसन्न मुद्रा में वापस आई। रानी ने खेल समाप्त करते हुये पुरोहितजी अंगूठी, चाकू और जनेऊ वापस कर दिये और आज सचमुच खेलने में चतुर हैं। आपके साथ खेलकर अच्छा लगा।

पुरोहितजी खुशी-खुशी महल से वापस घर की ओर चले। उन्हें पता ही नहीं चला कि रानी ने उन्हें मूर्ख बनाया है। रानी ने पहले उसकी अंगूठी लेकर दासी को पुरोहित की पत्नी के पास समुद्रदत्त के रत्न लेने के लिये भेजा था, परन्तु पुरोहित की पत्नी ने मना कर दिया। दूसरी बार जनेऊ और चाकू देखकर उसे विश्वास हो गया कि सचमुच पुरोहितजी ने समुद्रदत्त के रत्न मंगवाये हैं और उसने वे रत्न निकालकर दासी को दे दिये और पुरोहितजी को पता भी नहीं चला।

रानी ने समुद्रदत्त के रत्नों को अपने रत्नों में मिला दिया और समुद्रदत्त को अपने रत्न पहचानने के लिये कहा। समुद्रदत्त ने तुरन्त अपने रत्न पहचान लिये। राजा समझ गया कि श्रीभूति ने छल से समुद्रदत्त के रत्न लेकर उसे इस हालत तक पहुँचाया है। उसने तुरन्त सैनिकों से श्रीभूति को पकड़कर लाने को कहा। पुरोहितजी अपने घर पहुँचने के पहले ही पकड़ कर ले गये। सारा नगर उनके इस अपराध पर उनका अपमान करने लगा। श्रीभूति को राजा के सामने लाया गया। राजा ने क्रोध से कहा - रे पापी! तूने समुद्रदत्त के रत्न को हड़पकर भयंकर अपराध किया है। फिर उसने न्याय विद्वानों से सलाह कर निर्णय दिया कि हम तुम्हें तीन प्रकार की सजा दे रहे हैं। तुम्हें जो एक सजा पसंद हो वह तुम्हें भोगना होगी। पहली सजा - श्रीभूति को सारा धन छीन लिया जाये और राज्य से बाहर निकाल दिया जाये। दूसरी सजा - पहलवानों के द्वारा 32 मुक्के मारे जायें। तीसरी सजा - तीन थाली भरकर गोबर खाया जाये। इनमें से जो सजा पसंद हो वह स्वीकार करो।

श्रीभूति ने सबसे पहले गोबर खाना चाहा परन्तु थोड़ा गोबर खाने के बाद उसे उल्टी होने लगी। उसने सोचा इससे अच्छा तो मुक्के खाये जायें, कम से कम धन तो बचेगा। उसकी इच्छा से उसे पहलवानों ने मुक्के मारना प्रारम्भ किया। दस-बारह मुक्के खाने के बाद ही वह बेहोश हो गया। फिर अंत में उसकी सम्पत्ति छीनकर गधे पर बिठाकर राज्य से बाहर निकाला गया। बाद में वह श्रीभूति मर गया और खोटे परिणामों के फल में मरकर नरक चला गया।

श्रीभूति को उसके अपराध के फल में लौकिक में अपमान मिला ही साथ ही परलोक में भी नरक के भयंकर दुःख भोगना पड़े।

भक्ति की परीक्षा

मगध देश के अन्तर्गत मिथिला नाम की नगरी थी। इस नगर में राजा पद्‌मरथ राज्य करते थे। वे बहुत बुद्धिमान, राजनीति के जानकार, उदार और परोपकारी थे। एक दिन वे जंगल में शिकार खेलने गये। वहाँ उन्हें एक खरगोश दिखा और अचानक गायब हो गया। उस खरगोश को खोजते हुये वे कालगुफा नाम की एक गुफा में पहुँच गये। वहाँ एक सुधर्म नाम के दिगम्बर मुनिराज ध्यान मुद्रा में विराजमान थे। उनके शरीर से अपूर्व तेज दिख रहा था। मुनिराज की परम शांत मुद्रा देखकर राजा पद्मरथ अत्यंत प्रभावित हो गये और उन्होंने घोड़े से उतरकर मुनिराज को नमस्कार किया। मुनिराज ने ध्यान के बाद राजा को धर्म का उपदेश दिया। राजा ने मुनिराज के उपदेश से प्रभावित होकर उनसे अणुव्रत अंगीकार किये। बाद में उन्होंने मुनिराज से पूछा - हे प्रभो! वर्तमान में जिनधर्म की प्रभाव की वृद्धि करने वाले आपके समान और कोई महापुरुष और हैं क्या? यदि हैं तो वे कहाँ विराजमान हैं?

मुनिराज ने कहा - राजन्! चम्पानगरी में इस समय बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य विराजमान हैं। उनके शरीर की आभा के सामने तो सूर्य और चन्द्र का प्रताप भी फीका लगता है। उन्होंने अपनी आत्मा के अनंत गुण प्रगट किये हैं। उन जैसे सूर्य के समान महापुरुष के सामने मैं तो दीपक की भांति हूँ।

मुनिराज के द्वारा तीर्थंकर की प्रशंसा सुनकर राजा पद्मरथ को भगवान वासुपूज्य के दर्शन करने की तीव्र भावना हुई। वे उसी समय भगवान वासुपूज्य के दर्शन के लिये चल दिये। धन्वन्तरी और विश्वानुलोम नाम के दो देवों को यह सारी घटना मालूम चली तो वे राजा पद्मरथ की भक्ति की परीक्षा करने के लिये मध्यलोक में आये। उन्होंने राजा की दृढ़ता देखने के लिये उन पर उपद्रव करना प्रारम्भ कर दिये। पहले उन्हें एक भयंकर सर्प दिखलाया, इसके बाद राज्य पर आपदा दिखलाई, अग्नि का लगना,

प्रचण्ड हवा का चलना, भयंकर वर्षा, बहुत कीचड़ और कीचड़ में फंसा हुआ हाथी दिखलाया। राजा के साथ गये हुये उनके सभी साथी बहुत घबरा गये और निराश हो गये। मंत्रियों ने यात्रा को अमंगलमय बतलाकर राजा पद्मरथ को अपने राज्य वापस लौटने का आग्रह किया, परन्तु राजा ने किसी की बात नहीं सुनी और बहुत उत्साह और प्रसन्नता के साथ नमः वासुपूज्याय कहकर अपना हाथी आगे बढ़ाया। पद्मरथ की इस प्रकार की अचल भक्ति देखकर दोनों देवों ने उसकी बहुत प्रशंसा की। इसके बाद पद्मरथ को सभी रोगों को नष्ट करने वाला एक दिव्य हार और बहुत सुन्दर वीणा प्रदान की।

पद्मरथ राजा ने चम्पा नगरी पहुँचकर समवशरण में विराजे हुये, आठ प्रातिहार्यों से विभूषित, देवों, विद्याधरों, इन्द्रों, राजाओं और महाराजाओं द्वारा पूजित, समवशरण में विराजमान केवलज्ञानी भगवान वासुपूज्य के दर्शन किये, उनकी पूजा-वन्दना की और उनका उपदेश का लाभ लिया। भगवान के उपदेश का राजा के जीवन पर आश्चर्यकारी प्रभाव पड़ा। भगवान की वाणी सुनकर वे जिनदीक्षा लेकर दिगम्बर मुनिराज बन गये और तप के प्रभाव से उन्हें अवधि और मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो गया। वे भगवान वासुपूज्य के गणधर बनकर उन्हीं की सभा में विराजमान हा गये।

इस कहानी से संदेश मिलता है कि पवित्र हृदय से की गई भक्ति मोक्ष की परम्परा से कारण से बनती है।

जैनत्व गौरव

दक्षिणी अफ्रीका के फ्री स्टेट प्रान्त में स्थित क्लोकानने शहर के निवासी को उनके बगीचे से प्राप्त शिलापट्ट प्राप्त हुआ। शिलापट्ट में पीछी और कमंडल के साथ दिगम्बर मुनिराज और शिलापट्ट के नीचे दाहिनी ओर भगवान ऋषभदेव के प्रतीक चिन्ह वृषभ चिन्ह और बाईं ओर भगवान शीतलनाथ के प्रतीक के रूप में कल्पवृक्ष चिन्ह अंकित है। इससे यह अनुमान होता है कि प्राचीन समय में जैन धर्म दूर देशों में भी व्यापक था।

धर्म कब ?

एक सेठ की धर्मपत्नी हमेशा सेठ जी को जिनमंदिर जाने, स्वाध्याय करने, धर्म में मन लगाने की प्रेरणा देती रहती थी। पति ने कहा - अभी तो कमाने-खाने और भोगने के दिन हैं, अभी धर्म करने की इतनी क्या जल्दी है? वह तो बुढ़ापे मे आराम से करेंगे एक बार पति बीमार पड़ गया तो उसने पत्नी से दवा मांगी तो पत्नी ने कहा - दवा खाने की इतनी क्या जल्दी है? बुढ़ापे में खा लेना यह सुनकर पति चिल्लाकर बोला - अरी मूर्ख! क्या मरने के बाद दवा खिलायेगी? पत्नी ने शांत स्वर से कहा - जैसे रोग की पीड़ा को दूर करने के लिये तुरन्त दवा की आवश्यकता होती है वैसे संसार और मिथ्यात्व के रोग से मुक्त होने के लिये धर्म की दवा भी अभी खाना आवश्यक है। पत्नी की प्रेम से कही गई बात सेठजी की समझ में आ गई।

सुखी जीवन

भरत को वनवास के संस्मरण सुनाते हुये राम ने कहा - वन में कितना स्वतंत्र और शांतिपूर्ण जीवन था। जो सादा भोजन मिल गया वह खा लिया और झरनों का पानी पी लिया। न किसी से कुछ लेना और न किसी को कुछ देना। झोपड़ी में रहना और आनंद से जीवन जीना। उस समय सीता का राग था, वह दुःख का कारण बन गया। यदि पूरा राग छोड़कर दिगम्बर मुनिराज बनकर जंगल में ही रहते तो जीवन कितना सुखी होता...।

पूजा कैसे ?

एक जैन वकील ने पण्डित श्री प्रकाशचन्दजी हितैषी से प्रश्न किया कि पूजा बैठकर करना चाहिये तो हितैषीजी ने कहा - आप कोर्ट में जज से बात बैठकर करते हैं या खड़े होकर ? तो वकील बोले - वहाँ तो खड़े होकर ही बात करते हैं। फिर हितैषीजी ने पूछा कि किसी का स्वागत करते हो तो कैसे करते हो? वकील बोले - खड़े होकर ही करते हैं। तो हितैषीजी ने कहा - फिर तीन लोक के नाथ के जिनेन्द्र भगवान की भक्ति भी खड़े होकर ही करना चाहिये इसमें पूछने की क्या बात है? यदि कोई बीमारी है या असमर्थता है तो अलग बात है।

अयोध्या में जैन मंदिर के प्रमाण

भारत देश में अयोध्या राम मंदिर के निर्माण को लेकर वर्षों से आंदोलन होते रहे हैं। 6 दिसम्बर 1992 में अयोध्या में बाबरी मस्जिद तोड़ दी गई। उसके बाद से अब तक कोर्ट में केस चलता रहा और 14 नवम्बर 2019 को देश की सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद के स्थान पर राम मंदिर निर्माण का आदेश दिया। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक तीर्थंकरों के काल में तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में ही होता है और निर्वाण सम्मेदशिखर से। इस तथ्य के अनुसार अयोध्या तो अनादिकाल से जैनों के लिये अयोध्या तीर्थ ही है।

अयोध्या के प्रसिद्ध स्थान हनुमान गढ़ी के रामायण से सम्बन्धित पुरातात्विक स्थलों की खोज के लिये 1976 में इतिहास के जानकार वरिष्ठ प्रोफेसर श्री बी.बी.लाल के नेतृत्व में एक टीम बनाई गई थी। उन्हें 19776-77 में यहाँ खुदाई हुई, जिसमें केश रहित जैन केवली की कायोत्सर्ग मुद्रा की प्रतिमा प्राप्त हुई। टेराकोटा पत्थर लाल भूरा रंग का पत्थर की यह प्रतिमा लगभग 2400 वर्ष पूर्व की है। इससे अयोध्या में प्राचीनकाल से ही जैन मंदिर होने के प्रमाण माना गया। बाद में भी अनेक जैन प्रतिमायें प्राप्त हुईं। फैजाबाद जिले शासन के 1960 के गजट के पेज नं. 31 पर जानकारी प्रकाशित हुई थी कि लगभग 2400 वर्ष पूर्व कोशल, मगध और अयोध्या के राजा नंद को पराजित कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने यहाँ अपना अधिकार कर लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान महावीर के समय भी यहाँ जैन मंदिर थे। यहाँ से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री को 2700 वर्ष प्राचीन माना गया है। अयोध्या सम्बन्धी लिखी गईं अनेक पुस्तकों में अयोध्या में जैन प्रतिमाओं के होने का उल्लेख किया गया है। वर्ष 630-644 में चीनी यात्री हेनत्सांग ने अयोध्या में बौद्ध मंदिर के साथ 10 जैन मंदिरों के होने का उल्लेख किया है।

उत्तरप्रदेश सरकार के 1960 के गजट के पेज नं. 354-355 पर उल्लेख है कि अयोध्या में 12वीं सदी में भगवान आदिनाथ के प्राचीन मंदिर को अफगान सेनापति शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी के भाई मखदूम शाह जुरण गोरी ने तोड़े थे। उत्तरप्रदेश के एक सर्वेक्षण की एक रिपोर्ट के पेज नं.297 पर अयोध्या में सैकड़ों वर्ष पूर्व के भगवान आदिनाथ के जिनमंदिर का होना स्वीकार किया है।

सुप्रीम कोर्ट का चाहे जो फैसला हो पर जिनागम के कोर्ट में अयोध्या जैनों का तीर्थ था और अनंतकाल तक रहेगा।

होली

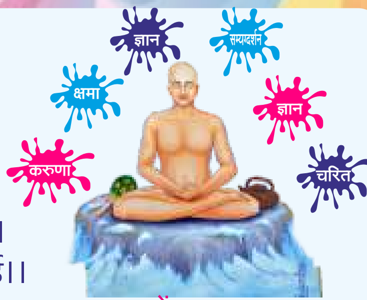

रंग बिरंगी होली आई, खुश होते सब बहनें भाई।
आओ ऐसी होली मनायें, जैसे मुनिराजों ने मनाई।।

करुणा क्षमा का रंग बनायें, मिलकर ज्ञान गुलाल उड़ायें।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की पिचकारी हम लेकर आयें।।
चलो चलें जिनमंदिर भाई, रंग बिरंगी होली आई..

मम्मी ने समझाया हमको, नहीं किसी पर रंग डालना।
नहीं दीवारें गन्दी करना, नहीं किसी को गुब्बारे मारना।।
इनसे नहीं कुछ लाभ है भाई, रंग बिरंगी होली आई..

पानी जितना खर्च करोगे, उतना पाप कमाओगे।
धर्म भाव की होली खेलो, तो आनंद मनाओगे।
इसमें ही हम सबकी भलाई,रंग बिरंगी होली आई..

अच्छे बच्चे

पापा मम्मी कहें वे बच्चे, सबसे अच्छे होते हैं।
सुबह को जल्दी उठते हैं, रोज मंदिर जाते हैं।।

रात्रि भोज न करते हैं, पानी छान के पीते हैं।
पाठशाला जो जाते हैं, सबको अच्छे लगते हैं।।
पापा मम्मी कहें वे बच्चे, सबसे अच्छे होते हैं।

बड़ों का आदर करते हैं, हिल मिलकर रहते हैं।
झूठ से हरदम डरते हैं, सच्ची बातें करते हैं।।
पापा मम्मी कहें वे बच्चे, सबसे अच्छे होते हैं।

समय पर सोते जगते हैं, णमोकार भी पढ़ते हैं।
मुनिराजों की भक्ति करते, जिनवर महिमा गाते हैं।
पापा मम्मी कहें वे बच्चे, सबसे अच्छे होते हैं।

नमस्कार किसको ?

कविवर पण्डित बनारसीदास जैन धर्म के दृढ़ अनुयायी थे। बादशाह जहांगीर से उनकी मित्रता थी और कई बार वे जहांगीर बादशाह के निमंत्रण पर उनके महल जाकर उनके साथ शतरंज खेला करते थे। एक बार पण्डितजी के किसी द्वेषी ने बादशाह से शिकायत कर दी कि आप इस राज्य के सम्राट हैं और पण्डित बनारसी दास आपको नमस्कार नहीं करते। इससे पहले बादशाह ने कभी इस बात पर कभी ध्यान नहीं दिया था तो उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ। बादशाह क्रोधित तो नहीं हुये पर उन्होंने पण्डितजी की परीक्षा करने का निर्णय किया। उन्होंने पण्डितजी को महल बुलवाया और स्वयं ऐसे कमरे में जाकर बैठ गये जिसका दरवाजा बहुत छोटा था। इस दरवाजे में सिर झुकाकर ही प्रवेश किया जा सकता था।

कविवर सैनिकों के निर्देश पर उस कमरे के सामने पहुँचे तो छोटा दरवाजा देखकर बादशाह की चाल समझ गये कि बादशाह मुझे अपने सामने नमस्कार करवाना चाहते हैं। पण्डितजी ने बुद्धि का प्रयोग करते हुये पहले पैर अंदर डाले फिर सिर पीछे करते हुये प्रवेश किया। बादशाह पण्डितजी की इस चतुराई से बहुत प्रसन्न हुये।

बादशाह ने पूछा - आप किसे नमस्कार करते हैं ?

तब कवि बनारसीदासजी ने उन्हें तुरन्त एक छन्द बनाकर उस प्रश्न का उत्तर दिया -

जगत प्राणी जीत है रहो गुमानी एसौ, आस्रव असुर दुखदानी महाभीम है।
थाको परताप खंडवै को प्रगट भयो, धर्म को धरैया कर्म रोग को हकीम है।।
जाकै प्रभाव आगे भागे परभाव सब, नागर नवल सुखसागर की सीम है।
संवर कौ रूप धरै, साधै शिवराह एसो, ज्ञानी पातशाह ताकौ मेरी तसलीम है।।

(जिसने संसार के समस्त प्राणियों को जीत लिया, ऐसा आस्रव असुर के समान दुख देने वाला महाभीम है ऐसे महाबली के प्रताप को नाश करने के लिये जो धर्म के धारी हैं और कर्म रूपी रोग के नाश करने के लिये वैद्य के समान हैं, जिसके प्रभाव के सामने समस्त परभाव भाग जाते हैं, जो अनन्त सुख सागर के धारी हैं, जो संवर के रूप को धारण करते हैं और मोक्षमार्ग को साधते हैं ऐसे बादशाह जिनेन्द्र देव को मेरा नमस्कार है।)

बादशाह पण्डितजी का उत्तर सुनकर बहुत खुश हुये और उन्हें कुछ वस्तु मांगने के लिये कहा। तब पण्डितजी ने कहा यदि आप कुछ देना ही चाहते हैं तो मेरा एक निवेदन स्वीकार कीजिये। आज के बाद से आप मुझे कभी यहाँ नहीं बुलवायें। बादशाह ने खुशी-खुशी यह बात स्वीकार कर ली।

इस प्रसंग से यह सीख मिलती है कि आज जैन समाज का व्यक्ति लोक व्यवहार में दूसरों का मान रखने के लिये अन्य कुदेवों और कुगुरुओं को नमस्कार करते हैं लेकिन पण्डित बनारसीदासजी ने बादशाह के नाराज होने की संभावना के बाद भी उन्हें नमस्कार नहीं किया। आज लोग उच्च पदों पर बैठे लोगों से मित्रता को अपना गौरव समझते हैं परन्तु पण्डितजी बादशाह जहांगीर की मित्रता को अपना गौरव नहीं समझते थे बल्कि उनसे मिलना अपने समय की बरबादी मानते थे। ऐसी अपूर्व दृढ़ता के धनी थे कविवर पण्डित बनारसीदासजी।

ये है हमारा गौरवमयी इतिहास

जामा मस्जिद - अहमदाबाद स्थित एक मस्जिद, इसका निर्माण 1424 में अहमद शाह प्रथम द्वारा जैन मंदिर ध्वस्त कर किया गया था ।

देवल मस्जिद, निजामाबाद - 9वीं सदी में महमूद बिन तुगलक द्वारा जैन मंदिर तोड़कर बनाई गई मस्जिद

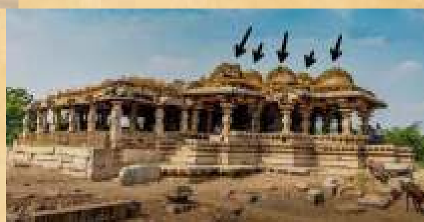

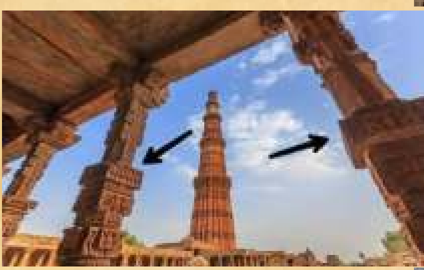

कुतुबमीनार - इसका निर्माण कुतुबद्दीन ऐबक ने 1193 में शुरु करवाया था, इसके पूर्व दरवाजे पर एक पर्शियन लेख है जिसमें ये लिखा है कि 27 हिंदू और जैन मंदिर तोड़कर कुतुबमीनार को बनाया है ।

टीपू सुल्तान द्वारा केरल पर आक्रमण कर ध्वस्त किया गया जैन मंदिर
गांव-पन्नामारम
जिला-वायनाड, केरल

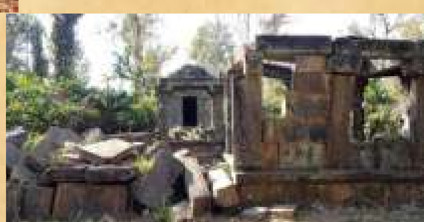

जामी मस्जिद-खंभात, जिला-आणंद गुजरात, राजकुमारी सुदर्शना द्वारा बनाया गया जैन मंदिर, अल्लाउद्दीन खिलजी ने 1296 में गुजरात पर चढ़ाई कर उसे मस्जिद में परिवर्तित कर दिया ।

JANUARY

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

FEBRUARY

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

MARCH

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

APRIL

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

MAY

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक – विराग शास्त्री

सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर – 482 002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434 Email : kahansandesh@gmail.com

JUNE

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

JULY

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

AUGUST

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

SEPTEMBER

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

OCTOBER

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

NOVEMBER

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

DECEMBER

Sun.	Mon.	Tue.	Wed.	Thu.	Fri.	Sat.
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

दशलक्षण महापर्व – 23 अगस्त से 1 सितंबर 2020 । दीपावली – 15 नवम्बर 2020 । रक्षाबंधन – 3 अगस्त 2020 । महावीर जयंती – 6 अप्रैल 2020 । श्रुत पंचमी – 27 मई 2020 । पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस –

बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों को प्रवाहित करने में सक्रिय संस्था

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा निर्मित

- समस्त वीडियो
- धार्मिक बाल गीत
- पौराणिक कहानियाँ
- एनीमेशन
- चहकती चेतना के अंक आदि

16GB PAN DRIVE

अब पेन ड्राइव में उपलब्ध

राशि **550/-**

निर्देशन, संकलन एवं रचनाकार
विराग शास्त्री, जबलपुर

संपर्क - Whatsapp **7000104951**

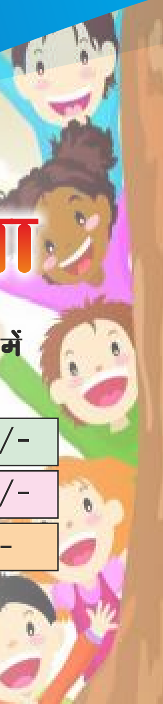

चहकती चेतना

में सहयोग देकर
जिनधर्म की प्रभावना को जीवंत बनाने में
हमारा सहयोग करें।

आपका सहयोग
हमारा संबल

एक अंक प्रकाशन सहयोग	- 21000/-
स्थायी प्रकाशन सहयोग	- 11000/-
प्रकाशन स्तंभ	- 5100/-

Bank Name : **Punjab National Bank**
Branch : **Fawwara Chowk, Jabalpur**
Saving A/c No.: **19370001030106**
IFSC : **PUNB01937000**

आप सहयोग राशि निम्न
बैंक खाते में जमा कर
हमें व्हाट्सएप द्वारा सूचित करें।

सहयोग देने वाले साधर्मियों का नाम पत्रिका में नियमित प्रकाशित किया जायेगा।

प्रश्न आपके उत्तर जैनागम के

प्रश्न : 1 - तेरापंथ क्या है और कब से है ?

उत्तर - संवत् 1750 में पूरे देश में जैन मंदिरों पर भट्टारकों का अधिकार था। भट्टारक ही मुनि कहलाते थे। उनकी बहुत पूजा भक्ति की जाती थी। देश के 20 बड़े नगरों में उनकी गद्दियाँ थीं और छोटे - छोटे नगरों के भट्टारक बड़े भट्टारकों के शिष्य के रूप में कार्य करते थे। क्रियाकाण्ड और आडम्बर के कारण कोई भी जैनी मूल जैन धर्म को नहीं जानते थे। इसके बाद आगरा में संवत् 1771 में पण्डित बनारसीदासजी हुये। वे समयसार को पढ़ते थे और उन्होंने समयसार के कलशों पर आधारित समयसार नाटक नाम की सुन्दर काव्य रचना की थी। वे समयसार की चर्चा गोष्ठियों में करते थे इसलिये इन्हें अध्यात्मी कहा जाने लगा था। इसी समय अमर नाम के साधर्मी ने भट्टारकों के आडम्बर और क्रियाकाण्ड की धर्म विरुद्ध 13 बातें थीं जो कि हिंसा और मिथ्यात्व की पोषक थीं। उन्होंने इनका निषेध किया था, यहीं से तेरह पन्थ कहलाया। इस तेरहपंथ को शुद्धाम्नाय भी कहा जाता है। इसका प्रारम्भ सन् 1773 में हुआ। वे 13 क्रियायें इस प्रकार हैं -

1. दश दिग्पाल की स्थापना नहीं करना।
2. भट्टारकों और मठों में रहने वाले त्यागियों को गुरू नहीं मानना।
3. भगवान के चरणों में और किसी भी अंग में चन्दन नहीं लगाना।
4. सचित्त फूलों से भगवान की पूजा नहीं करना।
5. रात्रि को दीपक से आरती नहीं करना।
6. ठोना के चावलों से आशिका नहीं लेना।
7. मंदिरों में बोली नहीं करना।
8. रात्रि को पूजन नहीं करना।
9. जिनप्रतिमा का न्हवन नहीं करना।
10. बैठकर पूजा नहीं करना।
11. हरे फल नहीं चढ़ाना।
12. बना हुआ अनाज (रोटी-चावल) नहीं चढ़ाना।
13. शासन देवी देवताओं को धरणेन्द्र पद्मावती को जिनमंदिर में स्थापित नहीं करना।

प्रश्न : 2 - बैंगन क्यों नही खाना चाहिये ?

उत्तर - बैंगन में सूक्ष्म जीव होते हैं इसलिये वह अभक्ष्य है।

प्रश्न : 3 - क्या अदरक, गाजर-मूली में आलू के समान अभक्ष्य का दोष है ?

उत्तर - हाँ, जैसे आलू के हर अंश में एकेन्द्रिय जीव हैं वैसे ही अदरक, गाजर-मूली में भी अनन्त जीव राशि होती है। इसके सेवन से भयंकर पाप का बंध होता है।

मुनि बना कंस

मथुरा नगरी में वशिष्ठ नाम का तापस रहता था। वह अज्ञानी यमुना नदी के किनारे तप करता था, वह एक पैर पर खड़ा होकर अपने दोनों हाथ ऊपर रहता था। उसके सिर के बालों की चोटियाँ थीं। एक दिन दिगम्बर मुनि वीरभद्र जी अपने 500 शिष्यों के साथ आये। उनके साथ नये दीक्षित मुनिराज ने वशिष्ठ की तपस्या देखकर कहा - अहो! वशिष्ठ तो महान तपस्वी हैं। तब वीरभद्र मुनि ने अपने शिष्य को वशिष्ठ को अज्ञानी बताते हुये उसकी प्रशंसा करने से रोका। तब वशिष्ठ ने पूछा - मैं अज्ञानी कैसे हूँ? आचार्य ने उत्तर में कहा - तुम छःकाय के जीवों को पीड़ा पहुँचाते हो, इसलिये अज्ञानी हो। तुम अग्नि में यज्ञ करते हुये एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों की हिंसा का पाप करते हो। जो जीव इतनी हिंसा करता हो, वह साधु कैसे हो सकता है? वह तो अज्ञानी ही है। तुम मिथ्यादर्शन ज्ञान चारित्र से सहित हो। एक जैन मार्ग ही सच्चा मार्ग है। इसी जैन मार्ग में अज्ञान को अंत करने का उपाय बताया है।

आचार्य की बात सुनकर वशिष्ठ उनसे प्रभावित हो गया, उसे इस बात का ज्ञान हो गया वह गलत मार्ग पर है। उसने वीरभद्र मुनिराज से दिगम्बर दीक्षा ग्रहण कर ली और संघ के साथ विहार करने लगे। संघ के सभी मुनिराजों को तो प्रतिदिन आहार की उचित व्यवस्था हो जाती थी परन्तु पाप उदय से वशिष्ठ मुनि को कभी-कभी आहार मिलता पाता था। उन्हें परिषह सहन करने का अभ्यास हो गया। गुरू की आज्ञा लेकर वे अकेले विहार करने लगे।

महातपस्वी वशिष्ठ मुनिराज विहार करते हुये वापस मथुरा नगरी आये तो वहाँ के राजा उग्रसेन ने उनकी बहुत पूजा भक्ति की। वशिष्ठ मुनि ने एक माह का उपवास किया हुआ था। वे पारणा के लिये विधिपूर्वक नगर जाने लगे। तब राजा उग्रसेन ने नगरवासियों को आहार देने से रोक दिया और कहा - मैं ही मुनिराज को आहार दूँगा। मुनिराज पुनः दूसरे दिन आहार के लिये पधारे तो राजा उग्रसेन मुनिराज को आहार देना ही भूल गया। पूरे मथुरा में घूमने के बाद भी मुनि को आहार नहीं मिला। वे थककर नगर के समीप की विश्राम करने लगे। उन्हें देखकर नगरवासी कहने लगे - कितने दुःख की बात है कि राजा स्वयं तो आहार नहीं देता और हमें भी आहार नहीं देने देता। यह बात मुनिराज ने सुन ली और उन्हें क्रोध आ गया।

क्रोध में मुनि वशिष्ठ ने निदान बंध किया कि अगले भव में मैं उग्रसेन को पुत्र होकर अपने अपमान का बदला लूँ। तपस्या के प्रभाव से मुनि का निदान पूरा हुआ और वशिष्ठ मुनि के जीव ने राजा उग्रसेन की रानी पद्मावती के गर्भ से जन्म लिया। यह बालक जन्म से अत्यंत क्रोधी था। उसका उग्र रूप देखकर रानी पद्मावती ने यमुना नदी में टोकरी में रखकर बहा दिया। इसका नाम कंस था जो श्रीकृष्ण के मामा थे। बाद में कंस ने उग्रसेन राजा को बन्दी बना लिया। बाद में श्रीकृष्ण ने कंस का वध किया।

ज्ञान पहेली

नीचे दी गईं पहेलियों का उत्तर खोजिये।

1
सबको देख रहे हैं पल-पल।
उन्हें देखना है मुश्किल।।

2
सुख में ध्याओ, दुःख में ध्याओ।
ध्याते ही शिव सुख पाओ।।

3
जग में गूंजे उसका नाम।
एक महान नारी का काम।
अपने पति को धर्म में लाया।
जिनमुनि का उपसर्ग मिटाया।।

4
जिनधर्म की हो प्रभावना,
जीवन का उद्देश्य महान।
ग्रंथ लिखा और प्राण गंवाये,
ऊंचा रखा जिनशासन नाम।।

5
तीर्थ एक है मंगलकार, शोभे समवशरण गुणखान।
पार्श्वनाथ का नाम जुड़ा है, एक अंग शरीर का जान।।

6
जिनसे भारत की पहचान, एक वीर इतिहास में जान।
आदि पुत्र जग में विख्यात, हो विरक्त लिया निर्वाण।।

7
तीन लोक में मंगलकार, उनकी संख्या होती चार।
णमोकार के साथ पढ़ें हम, बतलाओ तुम करो विचार।।

8
खाली भी और भरा हुआ,
पसरा है चहुँ ओर।

उत्तर इसी अंक में है।

अब नहीं उड़ाऊँगा

अरे पवन! सुबह सुबह कहाँ चले?

तुम तो दुनिया से बेखबर ही रहते हो नक्ष। अरे ! आज मकर संक्रान्ति का पर्व है।

ऐसा कोई पर्व तो जैन धर्म में नहीं है। यह तो हिन्दुओं का पर्व है। नक्ष ने समझाते हुये कहा।

भाई! पर्व चाहे हिन्दुओं का हो या चाहे जैनों का मुझे इससे क्या ? हम तो मजे करेंगे।

ये तो तुम्हारी इच्छा है पर ये तो बताओ तुम जा कहाँ रहे हो ?

पतंग लेने। आज दिन भर पतंग उड़ाऊँगा। मेरे पास तो ऐसा मांझा है जिससे एक बार में दूसरे की पतंग कटकर नीचे....।

और किसी का गला भी कटकर नीचे.... नक्ष ने बीच में कहा

क्या मतलब? ये पतंग के बीच में गला कहाँ से आ गया?

आ गया नहीं आता ही है। तुम जैसे लोग अपने मजे के लिये किसी की प्राणों की भी परवाह नहीं करते।

ये तुम कैसी बात कर रहे हो? माना कि मैं ज्यादा धरम-करम नहीं करता, पर किसी के प्राण लेना तो दूर, मैं तो किसी को परेशान भी नहीं करता।

वही तो मैं कह रहा हूँ तुम किसी को परेशान भी नहीं करते तो क्यों किसी जीव की मौत में कारण बन रहे हो।

ज्यादा पहेलियाँ मत बना। जो कहना है वह सीधा-सीधा बोलो।

देखो पवन! आज तुम्हारे साथ अनेक लोग पतंग उड़ायेंगे और तुम्हारे इस तेज कांच वाले मांझे से पूरे देश में न जाने कितने पक्षियों की गर्दन कट जायेगी, सैकड़ों पक्षियों के पंख कट जायेंगे और कितने घायल होकर कई दिन तक अपनी मौत का इंतजार करेंगे।

पर हम जानबूझकर तो ऐसा नहीं करते... पवन ने सफाई देते हुये कहा।

तो क्या हुआ? होता तो इसी पतंग के कारण से है ना। पूरे देश में पतंग के मौसम में हर साल हजारों पक्षी मर जाते हैं, समाज सेवा करने वाले पतंग के धागे में फंसे हजारों पक्षियों की जान बचाते हैं, उनका इलाज कराते हैं और तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि पतंग

के चाइनीज मांझे से कई बच्चों की गर्दन कट गई। पिछले वर्ष जयपुर में एक युवक अपनी बाइक से अपने घर जा रहा था। रास्ते में कुछ बच्चे चाइनीज मांझे से पतंग उड़ा रहे थे तो उसके मांझे से उस युवक का गला कट गया और वह वहीं गिरकर मर गया। उस युवक की शादी को अभी एक महीने ही हुआ था।

बात तो तुम्हारी गम्भीर है पर ऐसे तो हम पतंग उड़ा ही नहीं पायेंगे..

क्या किसी के जीवन से बहुमूल्य हमारा पतंग का शौक है? पक्षियों का अपना परिवार होता है। किसी के जीवन को अपने मजे के लिये मौत दे देना कहाँ के संस्कार हैं? दूसरे ऐसे कई खेल हैं जो बिना हिंसा के खेले जा सकते हैं।

सच में दोस्त! हमें किसी को दुःख पहुँचाने का कोई अधिकार नहीं है। तुम मेरे सच्चे मित्र हो। आज से मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब कभी पतंग नहीं उड़ाऊँगा।

जो सहस्स सहस्साणं संगामे दुज्जये जिणे। एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस सो परमो जयो।।
जो युद्ध में हजारों लोगों को जीतते हैं वे विजेता नहीं हैं बल्कि जो एक मात्र अपने आपको जीतते वही सच्चे विजेता हैं।

शोक समाचार

- विलक्षण विद्वान और पूज्य गुरूदेवश्री के अनन्य भक्त पण्डित **श्री वीरेन्द्रकुमारजी आगरा** का 72 वर्ष की उम्र में 6 नवम्बर को जबलपुर में आकस्मिक निधन हो गया।
- श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के यशस्वी प्राचार्य, सिद्धहस्त लेखक, सरल शैली के प्रवचनकार, सरलमना व्यक्तित्व **पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल** का 87 वर्ष की आयु में जयपुर में 12 नवम्बर को जयपुर में निधन हो गया। इस प्रसंग पर मातुश्री श्रीमती कमला बाई भारिल्ल द्वारा चहकती चेतना को 2100/– प्रदान की गई।
- 16 नवम्बर 2019 को बुरहानपुर निवासी **श्री बाबूलालजी जैन** का 87 वर्ष की आयु में अत्यंत शांत परिणामों से निधन हो गया। आप बहुत स्वाध्याय प्रेमी व्यक्तित्व थे और श्री अतुल जैन और ब्र.वन्दना बेन देवलाली के पिताश्री थे। दिवंगत आत्मा के भव विराम की मंगल कामना। इस प्रसंग पर चहकती चेतना को 1100/- की राशि प्रदान की गई ।
- जबलपुर निवासी श्री मुन्नालाल जी जैन का दिनांक 10 दिसंबर 2019 को अत्यंत शांत परिणामों से 92 वर्ष की उम्र में अत्यंत शांत परिणामों से निधन हो गया ।

ज्ञान पहेली के उत्तर

1. सिद्ध 2. आतमा 3. रानी चेलना 4. पण्डित टोडरमलजी 5. नैनागिरि
6.भरत 7. अरहंत सिद्ध, मुनि और जिनधर्म 8. आकाश

शिविर सम्पन्न

सम्मेदशिखरजी - श्री कुन्दकुन्द कहान प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा पंचवर्षीय शिविर की श्रृंखला का सातवाँ निजात्मकेलि आध्यात्मिक शिक्षण शिविर मध्यलोक संस्थान, शिखरजी में सम्पन्न हुआ। दिनांक 3 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2019 तक आयोजित इस शिविर में विधान के साथ देश के अनेक श्रेष्ठ विद्वानों के सान्निध्य में प्रवचन, गोष्ठियों और कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

सम्मेदशिखरजी - श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा सम्मेदशिखरजी में निर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 नवम्बर से 29 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित रजनीभाई दोशी, डॉ. वीरसागरजी जैन, ब्र. नन्हेभाई सागर, श्री विराग शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सोनगढ़ - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा सोनगढ़ में संचालित श्री कहान शिशु विहार में 14 नवम्बर से 16 नवम्बर तक जिनदेशना बाल संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को श्री विराग शास्त्री, पण्डित सोनू शास्त्री, मीना बेन की कक्षाओं का लाभ मिला। साथ ही बा. ब्र. हेमंतभाई गांधी की एक विशेष कक्षा का भी लाभ प्राप्त हुआ।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न-सागर जिले के गौरझामर ग्राम में जिनमंदिर का प्रथम वार्षिकोत्सव अनेक आयोजनों पूर्वक सम्पन्न हुआ।इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्र कुमार जी जबलपुर, ब्र. मनोज जी जबलपुर, पण्डित सचिन्द्र शास्त्री गढ़ाकोटा के द्वारा स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। विधान एवं कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।रत्नत्रय निलय भवन का शिलान्यास ब्र.अभिनंदन शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ ।

''अब नहीं'' पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण Not Any More प्राप्त करें

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा विराग शास्त्री द्वारा लिखित लघु धार्मिक नाटक की पुस्तक का हिन्दी भाषा में ''अब नहीं'' का प्रकाशन किया गया था। इस पुस्तक को सम्पूर्ण जैन समाज से अपार स्नेह प्राप्त हुआ और इस पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण की मांग को देखते हुये इसके अंग्रेजी संस्करण **Not Any More** का प्रकाशन भी किया गया है। इसके प्रकाशन में श्रीमति पूर्णिमा बेन उल्लास भाई जोबालिया का विशेष अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ है।

बधाई... बधाई.. बधाई.

चैतन्य बाल भास्कर के परिणाम घोषित

जैन समाज के बालक - बालिकाओं की रचनात्मक प्रतिभाओं को अवसर देने के उद्देश्य से आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर और सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में चहकती चेतना पत्रिका के अन्तर्गत एक अभिनव प्रतियोगिता चैतन्य बाल भास्कर का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में तीन आयु वर्गों में देश के 16 प्रान्तों के 3897 बालक-बालिकाओं ने सहभागिता की। इसमें सर्वोत्तम रचनात्मक प्रतिभा के निर्णय निम्नानुसार हैं -

A बाल वर्ग 8 वर्ष से 12 वर्ष

iFke & lE;d luhy tu] efLtn cnj] eEcb
f}rh; & vfHk"kd iou tu] xk/khuxj ¼xt-½] Kkflr uohu tu] edjkfu;k] lkxj e-i-
rrh; & vf'kdk vk'kh"k tu] Vhdex< ¼e-i-½] vkn'k vk'kh"k tu] x<k] tcyij ¼e-i-½
lefdr l/khj tu] xkgn ft-fHk.M ¼e-i-½]
jkE;k euh"k idt vk;k'kh lUrk"k tu] Vhdex< ¼e-i-½

fo'k"k lkRouk ijLdkj & vnfod jtuh'k tu] fiMkok ft- >kykokM ¼jkt-½ 'kk'or ijh tu idt tu] 'kk'or /kke] mn;ij] Jk;k vk'kh"k tu] x<k] tcyij ¼e-i-½] byk fur'k dekj tu] >kIh ¼m-i-½] gf"krk vdj tu] Vhdex< ¼e-i-½] i'ke vdj tu] dkuij ¼m-i-½
lkRouk ijLdkj & n'kuk vftr dekj tu] Vhdex< ¼e-i-½] vkxe fot; dekj tu] dVjk ckTkj] lkxj] vkfn vry tu] yfyrij ¼m-i-½] fuf'k luhy tu] x<kdkVk] lkxj ¼e-i-½] l{ke jktUn tu] fj"kHk je'k tu] ek-ft-fHk.M ¼e-i-½

B किशोर वर्ग – 13 वर्ष से 16 वर्ष

iFke & onghfodkUr tu] dkVk jkt-
f}rh; & f'kokx euh"k tu] >kIh ¼m-i-½] lgkuh noUn tu] ik-djouk ft-nekg ¼e-i-½
xkre x.k/kj i/kku firk Jh lt; i/kku ¼ukxij egk-½
fl)kUr lnhi dekj tu] flouh ¼e-i-½
rrh; & 'kf) vk'kh"k tu] i<jiij ft- lkykij ¼egk-½] flehfou; tu] Ekfge jtuh'k tu] tcyij & lkux<] vf'krk lrh'k tu] cnjokl ft-f'koijh ¼e-i-½

fo'k"k lkRouk ijLdkj & r#.k lfer nk'kh] i<jiij ¼egk-½] vu"dk jktdekj tu] >kykokM ¼jkt-½] fjfrdk jkd'k tu] 'kgijk fHkVkuh] ft- tcyij ¼e-i-½] v{k; fnu'k tu] Vhdex< ¼e-i-½] vkU;k luhy dekj tu] Vhdex< ¼e-i-½

lkRouk ijLdkj & yfC/k fnu'k tu] Vhdex< ¼e-i-½] fo'kky ckykth drkQky] vk/k ft- fgxkyh ¼egk-½] O;ke ftXu'k lB] jktdkV ¼xt-½] vk;k v#.k tu] txrijk] t;ij ¼jkt-½] Lrfr lfer tu] [k.Mok ¼e-i-½] rUoh v:.k tu] jkgrd ¼gfj;k.kk½] fjfrd luhy tu] ek ft- fHk.M dkO;k fj"kh dekj tu] lkxj ¼e-i-½] v.ko lfpu nk'kh] vdyt ¼egk-½] vkfn vkfnR; tu] ijdkVk] lkxj & lkux<] v'k vt; tu] x<kdkVk ft- lkxj ¼e-i-½] le; euh"k tu] rdkxt] bnkj ¼e-i-½] {kek luhy tu] ydokl ft- f'koijh ¼e-i-½] ueu Lor= fl?kb] lkux< ¼xt-½] efgek foiy igkM] i<jij ¼egk-½] fu'kd uohu tu] lkux< ¼xt-½] fd'kd vfer tu] ipdyk ¼gfj;k.kk½] lkUoh lrh'k tu] x<kdkVk ft- lkxj ¼e-i-½] vfufe"kk vujkx tu Vhdex< ¼e-i-½] vpy vthr tu] ikjl ft- fHk.M ¼e-i-½] lef) fufru tu] tkeuxj ¼xt-½] vkn'k inhi tu] i.k ¼egk-½] fo'kf) fodkUr tu] dkVk ¼jkt-½] vkto vkykd tu] flouh ¼e-i-½] fi;k'kh lt; tu] Vhdex< ¼e-i-½

युवा वर्ग 17 वर्ष से 20 वर्ष

iFke & d-ekuoh food tu] djuky gfj;k.kk

f}rh; & d-gf"krk [kepUn tu] mn;ij] d- le; lR; i/kku] nekg] 'kk'or /kke mn;ij

rrh; & d-Jfr ljUn dekj tu] dkVk] d-J) kftXu'k lB] jktdkV]
d-fnO;kjkd'kflg] exkoyh ft- v'kkduxj ¼e-i-½

fo'k"k lkRouk ijLdkj & d- Jk;k eukt tu] jkgrd gfj;k.kk] 'kHke eukt tu] jkgrd gfj;k.kk] d- vk;"kh v'kkd tu] Vhdex< ¼e-i-½] i|kr ;rhu tu] y[kuÅ ¼m-i-½] d- dfork dey tu] chuk ¼e-i-½ d- e;jh eUukyky tu] 'kk'or /kke] mn;ij] g"k iekn tu] fpydkuk] ft- lgkjuij ¼m-i-½ d- n'kuk Jk;k ikVuh] fNUnokMk ¼e-i-½] 'kHkk'k foukn tu] tcyij] 'kkg vfdrk g"ko/ku] i.k] vfnfr /keUn tu] dkVk ¼jkt-½] lk{kh luhy tu] lkxj ¼e-i-½

मराठी बाल वर्ग

iFke & ftu'k vkfnR; 'kkg] euekM
f}rh; & ifrKk idt tu] vkjxkckn egk-
rrh; & v{kjk vry nk'kh] Eglol ft- lkrkjk egk-

मराठी किशोर वर्ग

iFke & fo'k"k luhy tu] i.k egk-
f}rh; & flf) jkgy tu] i<jij ft- lkykij
rrh; & 'kk'or Loflur tu] i<jij ft- lkykij egk-

अंग्रेजी - बाल वर्ग
& vkReh ljHk 'kkg] vgenkckn xt-

अंग्रेजी - किशोर वर्ग
& vkReu ekfyd 'kkg] tkeuxj xt-

अंग्रेजी - युवा वर्ग
& leFk vfuy dekj tu] gjnk e-i-

कर्म का खेल मिटे न रे भाई

ये दुःख न जाने किन परिणामों का फल

उफ ! ये पीड़ा

राजस्थान के टोंक जिले में राजू देवी गुर्जर के यहाँ जुड़वां बच्चे पैदा हुये। उनमें से लड़का तो पूरी तरह ठीक है लेकिन लड़की के छः हाथ हैं। एक साथ पैदा हुये पर उदय बिल्कुल अलग।

कर्म का खेल मिटे न रे भाई

उदय पाप का
हिम्मत लाजवाब

गरीबी की मजबूरी

इस रिक्शेवाले की पत्नी का बच्चे के जन्म होने के बाद निधन हो गया ।

पशुगति के दुःख

यह मनुष्य पर्याय बहुत कीमती है इसके प्रत्येक क्षण का उपयोग देव-शास्त्र-गुरु की आराधना और स्वाध्याय में करना चाहिये ।

जन्म दिवस

जन्म-मरण के अभाव की भावना में ही जन्म दिन मनाने की सार्थकता है।

जल्दी से भगवान बनो तुम, अब अपना कल्याणक करो तुम।
जन्म मरण का नाश करो तुम, सिद्ध शिला पर वास करो तुम।।

ज्ञाता अपना भाव है, इसका हो श्रद्धान ।
जिनवाणी संकेत है, पाओ पद निर्वाण ।।

ज्ञाता संकेत कोटड़िया, हिम्मतनगर (गुज.) 13 नवंबर

जिन्मय चिन्मय को लखो, हो दुःखों का अंत ।
जीवन के हर चरण में, ध्याना जिन भगवन्त ।।

जिन्मय रजधीर जैन, सिगौड़ी म.प्र. 22 दिसं.

जिनवाणी सौरभ लहो, हो विमल परिणाम ।
अन्वय ऐसा कार्य हो, हो भवदुःख अवसान ।।

अन्वय सौरभ जैन, इंदौर(म.प्र.) 7 जनवरी

अनय अपना स्वभाव है, जानो इसका मर्म ।
स्वस्थित रहो स्वभाव में, यह ही सच्चा धर्म ।।

अनय विराग जैन, जबलपुर - 19 जनवरी

मै त्रिकाल ज्ञायक सदा, हूँ अनंत गुणधाम ।
ज्ञायक के श्रद्धान से, बनूँ सिद्ध भगवान ।।

ज्ञायक संकेत कोटड़िया, हिम्मतनगर (गुज.) 27 जनवरी

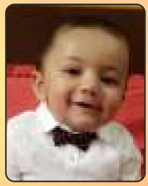

संवर मंगल काम है, मुनिजन को मन भाता है ।
जो संवर अपना लेता है, सिद्ध स्वयं बन जाता है ।।

संवर सिद्धार्थ पहाड़िया, किशनगढ़, राज. 9 मार्च

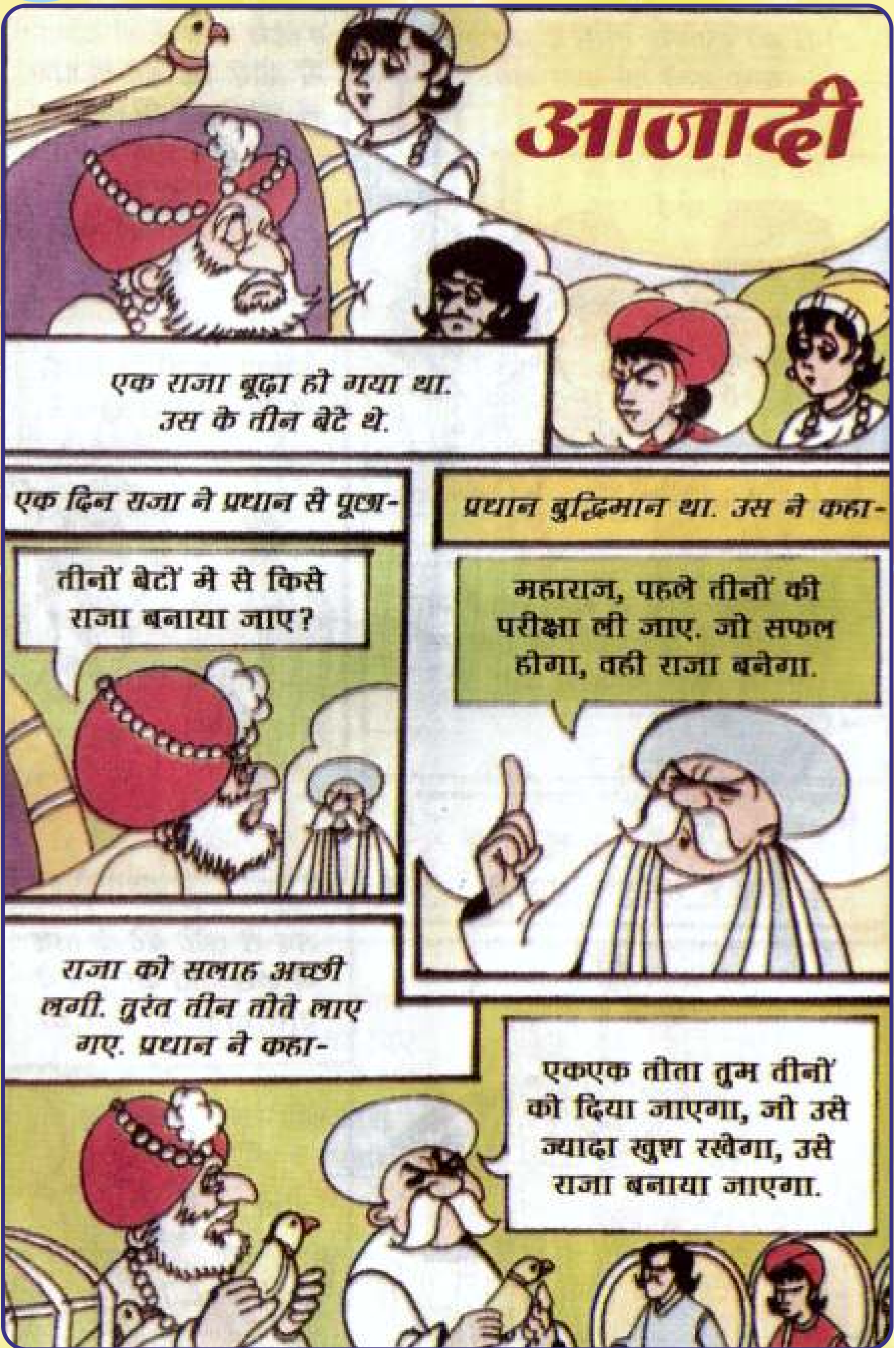
आजादी
एक राजा बूढ़ा हो गया था. उस के तीन बेटे थे.
एक दिन राजा ने प्रधान से पूछा-
तीनों बेटों में से किसे राजा बनाया जाए?
प्रधान बुद्धिमान था. उस ने कहा-
महाराज, पहले तीनों की परीक्षा ली जाए. जो सफल होगा, वही राजा बनेगा.
राजा को सलाह अच्छी लगी. तुरंत तीन तोते लाए गए. प्रधान ने कहा-
एकएक तोता तुम तीनों को दिया जाएगा, जो उसे ज्यादा खुश रखेगा, उसे राजा बनाया जाएगा.

तीनों को एकएक तोता दे कर 8 दिन बाद आने को कहा गया.
8 दिन बाद तीनों दरबार मे आए. बड़े बेटे के हाथ मे चांदी का पिंजरा था. तोता सिर झुकाए बैठा था. उस के सामने मीठे फल रखे थे.
देखिए, चांदी के पिंजरे में यह कितना खुश है.
दूसरे बेटे के हाथ में सोने का पिजरा था. हीरों से जड़े कटोरे मे फल रखे थे. पर तोता खामोश बैठा था.
मैं ने इसे सोने के पिंजरे मे रखा है. यह बहुत खुश है.
सब से छोटे बेटे के हाथ मे कुछ नहीं था. उस के पास तोता भी नहीं था.

प्रधान ने पूछा-
तुम्हारा तोता कहां है?
छोटा बेटा बोला-
मैं ने अपने तोते को उड़ा दिया. अब वह आजाद है और आजादी से बढ़ कर कोई खुशी नहीं हो सकती.
प्रधान बोला-
महाराज, आप का छोटा बेटा ही राजा बनने के लायक है.
आप के दोनों बेटों ने तोतों को सोने, चांदी के पिंजरे दिए. एक से बढ़ कर एक खाने की चीजें दीं. मगर तोते खुश नहीं थे. क्योंकि वे पिंजरे में कैद गुलाम थे.
फिर राजा के सब से छोटे बेटे को राजा बना दिया गया.
आजादी से बढ़ कर दूसरी कोई खुशी नहीं.

प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा का अपूर्व अवसर

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

- 6वीं कक्षा से 10वीं कक्षा तक लौकिक दर्शन के साथ धार्मिक अध्ययन
- सर्वसुविधायुक्त विशाल संकुल
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक यात्रा
- अनेक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के माध्यम से वैयक्तिक विकास
- सभी सुविधायें नि:शुल्क

फार्म जमा करने की अंतिम तिथि - 15 मार्च 2020

संपर्क : 02485644510, 9785643277, 7405439519, 7000104951

सुखद भविष्य का मंगल अवसर — बच्चों को प्रवेश दिलायें

श्री महावीर कुन्द कुन्द कहान शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित

समयसार विद्या निकेतन

"आत्मायतन" ग्वालियर

- म.प्र. के प्रमुख शहर ग्वालियर में अध्ययन का अवसर
- कक्षा 8वीं से 10वीं तक अध्ययन
- लौकिक अध्ययन के साथ धार्मिक अध्ययन की विशेष सुविधा
- बच्चों का सर्वांगीण विकास
- कुशल अध्यापकों का निर्देशन
- स्नेह की शीतल छाँव में अनुशासन के साथ शिक्षा

नवीन सत्र 1 अप्रैल 2020 से प्रारंभ

फार्म भेजने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2020

संपर्क सूत्र : 7023245776, 6263098138
9039365001, 9893224022

चहकती चेतना बाल पत्रिका का

आकर्षक रंगीन केलेण्डर प्राप्त करें

- वित्तीय वर्ष के अनुसार अप्रैल 2020 से मार्च 2021 तक के माह
- प्रत्येक पेज पर जैन धर्म की सतियों का सचित्र परिचय
- तीर्थंकरों के कल्याणक की तिथियां
- प्रमुख धार्मिक पर्व एवं त्यौहार

संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
मोबा. 7000104951
Email : kahansandesh@gmail.com

30/- रुपये मात्र

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

अवश्य पधारिये

आध्यात्मिक अनुभूति के लिये

अवश्य पधारिये

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संचालित

गुरु कहान कला संग्रहालय

GURU KAHAN ART MUSEUM

- जैन सिद्धांतों का जीवंत चित्रण
- महाग्रंथ समयसार के दृष्टांतों का सजीव चित्रण
- मुनि दशा, दस धर्म, बारह भावना और बहिनश्री के वचनामृत के अलौकिक चित्र
- संग्रहालय में देश के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों द्वारा निर्मित अनेक शिल्प एवं चित्र प्रदर्शित
- पूज्य गुरुदेवश्री के जीवन के विभिन्न सोपानों का अद्भुत प्रदर्शन
- रोचकता एवं नवीनता के लिये समय–समय पर संग्रहालय के चित्रों में परिवर्तन

भावी पीढ़ी को धर्म समझने का सुनहरा अवसर ..

अवश्य आईये और देखिये ...

आप महसूस करेंगे एक अलौकिक आध्यात्मिक अनुभूति के साथ जैन शासन का गौरव

गुरु कहान कला संग्रहालय

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर संकुल, सोनगढ़ जिला : भावनगर – 364250 (गुज.) पंकज जैन : 8209571103

info@gurukahanmuseum.org www.gurukahanmuseum.org gurukahamuseum

swasti computer # 9300642434